प्रसार-शिक्षा

[EXTENTION EDUCATION]

प्रसार शिक्षा का अर्थ

प्रसार का अर्थ शाब्दिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार से किया जा सकता है। 'शाब्दिक' अर्थ में 'प्रसार' का अभिप्राय है फैलाना (To extend) अर्थात् अधिक से अधिक लोगों को प्रभावित करना या अधिक से अधिक लोगों तक किसी जानकारी को पहुँचाना। 'व्यावहारिक' रूप में प्रसार से अभिप्राय है कृषि, घर और ग्रामीण जीवन का विकास करने के लिए जो भी कार्य सरकार और जनता के सहयोग से किया जाय।

प्रसार शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा है। इसे हम प्रौढ़-शिक्षा या स्कूल से बाहर की शिक्षा भी कहते हैं। प्रसार-शिक्षा दो शब्द 'प्रसार' और 'शिक्षा' से मिलकर बना है। अर्थात् शिक्षा का प्रसार करना। प्रसार-शिक्षा से तात्पर्य उस प्रकार की शिक्षा से अथवा शिक्षा की पद्धति से लगाया जा सकता है जो शिक्षा का प्रचार-प्रसार करती है। इस प्रकार की शिक्षा पद्धति में शिक्षा देने वाले या शिक्षा देने के कार्य में लगे हुए कर्मचारी या शिक्षक या पदाधिकारी अपने लिए पूर्वनिर्धारित कार्यक्षेत्र में शिक्षार्थियों के पास जाकर अथवा विभिन्न स्थानों में जाकर विभिन्न व्यक्तियों के बीच शिक्षा का प्रचार-प्रसार करते हैं। वास्तव में प्रसार-शिक्षा जनसमुदाय को, विशेष रूप से ग्रामीणों को शिक्षित और जागरूक करने की एक विधा है जो उन्हीं की आवश्यकताओं और समस्याओं पर आधारित रहती है। प्रसार-शिक्षा सतत् रूप से निरन्तर चलती रहती है। यह ग्रामीणों की हर जरूरत के साथ चलती है। इसके लिए कोई पूर्व पाठ्यक्रम नहीं रहता है। इसमें सीखने वाले और सिखाने वाले दोनों ही कुछ न कुछ, एक-दूसरे से ग्रहण करते हैं और दोनों का ही सम्मिलित अंशदान और मिश्रित योगदान इस प्रक्रिया में रहता है।

प्रसार शिक्षा एक कार्यक्रम है। इसे प्रसार शिक्षा कार्यक्रम (Extension Education Programme) कहा जाता है। क्योंकि इसे एक कार्यक्रम की तरह नियोजित (Planned) करके चलाया जाता है। प्रसार-शिक्षा कार्यक्रम विश्व के विभिन्न देशों जैसे अमेरिका, चीन तथा जापान आदि देशों में पहले से ही चलाया जा रहा है। भारत में भी यह लम्बे समय से चलाया जा रहा है। भारत में

Scanned with CamScanner

प्रसार-शिक्षा को एक विशेष अर्थ प्रदान किया गया है। यहाँ इसे एक विशेष ग्रामोन्मुख (Village oriented) बनाया गया है क्योंकि भारत प्रधानत: गाँवों का देश है तथा यहाँ की जनसंख्या का लगभग 75% गाँवों में बसता है। यहाँ प्रसार-शिक्षा का तात्पर्य शिक्षा की उस विद्या से लगाया गया जो **एस० वी० सूपे** के अनुसार—"ग्रामीणों तक उपयोगी सूचना एवं विचार पहुँचाने एवं प्रचारित प्रसारित करने का लक्ष्य रखती है"—Aims to extend and Spread or disseminate useful information or ideas to rural People."

यहाँ इस शिक्षा को प्रधानत: ग्रामवासियों के बीच से अशिक्षा अन्धविश्वास एवं दरिद्रता को दूर करने वाली एवं इसके स्थान पर उनके बीच शिक्षा, समृद्धि तार्किकता तथा आत्म निर्भरता का प्रकाश फैलाने वाली शिक्षा के रूप में अपनाया गया। गाँव के सर्वोन्मुख विकास के लिए ही इस विषय का प्रतिपादन हुआ है। प्रसार शिक्षा विद्यालयों एवं नियोजित पाठ्यक्रमों के दायरे से बाहर ऐसी शिक्षण प्रणाली है जो ज्ञानार्जन के साथ-साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को भी लक्षित करती है वास्तव में प्रसार-शिक्षा शिक्षण के उस पक्ष पर आधारित है जो व्यक्ति को जीवन-भर सीखने की ओर अग्रसर करती है। प्रसार शिक्षा के माध्यम से ग्रामीणों को नयी तकनीकों, नयी खोजों, नये उत्पादनों तथा बेहतर ढंग से कार्य सम्पादन की विधियों जैसी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। प्रसार शिक्षा की यह सबसे बड़ी विशेषता है इसकी प्राप्ति हेतु अर्थात् नयी तकनीकों, नयी खोजों और नये उत्पादनों की जानकारी हेतु ग्रहणकर्ता को कहीं जाना नहीं होता, स्वयं प्रसार कार्यकर्ता ग्रामीणों के पास जाकर उन्हें नयी जानकारियों से अवगत कराते हैं।

Scanned with CamScanner

करती है और उस प्रगति पथ पर

प्रसार शिक्षा की उत्पत्ति

(Origin of Extension-Education)

'प्रसार' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1873 में इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा किया गया था। इस समय इस शब्द 'प्रसार' का तात्पर्य विश्वविद्यालय की शैक्षिक उपयोगिताओं को सामान्य जीवन व्यतीत करने वाले जनसमूह तक पहुँचाना था, जहाँ वे रहते एवं कार्यरत हैं। इसके पश्चात् इस शिक्षा का प्रसार धीरे-धीरे संयुक्त गणराज्य (U.K.) की संस्थाओं में हुआ। सन् 1894 में वेरिहस ने Extension (प्रसार) शब्द का प्रयोग किसानों तक कृषि सम्बन्धी जानकारियों को पहुँचाने के सन्दर्भ में किया गया। अमेरिका में प्रसार कार्य का आविर्भाव "डॉ. सीमैन नैप" ने शैक्षणिक प्रयासों से सन् 1880 से 1910 के मध्य सम्पन्न हुआ। कृषि प्रसार (Agriculture Extension) को संयुक्त राज्य अमेरिका में मान्यता सन् 1914 में "स्मिथ लीवर एक्ट" के पारित होने पर प्राप्त हुई। 20वीं सदी के प्रारम्भ में यह अनुभव किया जाने लगा कि ग्रामीण जनता नगरों की ओर आकर्षित होती जा रही है और इन्हें शहरों में जाने से रोका जाना चाहिए। ऐसा करने पर ही खेती-बाड़ी, ग्रामीण उद्योग-धन्धों तथा ग्रामीण विकास को समुन्नत किया जा सकता है क्योंकि ग्रामीण विकास के बिना देश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है।

प्रसार शिक्षा की परिभाषा

प्रसार-शिक्षा के अर्थ को विभिन्न विद्वानों ने अपने अलग-अलग विचार को परिभाषित किया है जो निम्नलिखित है—

(1) **डगलस एस्मिंजर के अनुसार,** "प्रसार एक प्रकार की शिक्षा है, जिसका उद्देश्य मनुष्यों के मानसिक दृष्टिकोण और पद्धति में परिवर्तन लाना है, जिसके साथ कार्य किया जाय।"

"Extension is an education and that its purpose is to change the attitude and practices of the people with whom the work is done."

(2) **केल्सी एवं हर्ने,** "प्रसार एक स्कूल से बाहर की शिक्षा पद्धति है जिसमें बूढ़े एवं युवक सभी कार्य करने के द्वारा सीखते हैं। इसका उद्देश्य मनुष्य का विकास करना है।"

Scanned with CamScanner